नया सवेरा

राजेन्द्र तिवारी

नया सवेरा

नौटंकी शैली में लिखी गयी एक
सार्थक और रोचक लोक-नाटिका

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110002

नया सवेरा

राजेन्द्र तिवारी

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
'शफीक मेमोरियल'
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002
टेलेफोन : 3319282

ग्रन्थांक : 152
© भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ : **मूल्य : 3.00**
पहला संस्करण 1985

मुद्रक :
शान प्रिंटर्स
शाहदरा
दिल्ली-110032

109

अपनी ओर से—

सामने एक जंगल है और हांफता हुआ सन्नाटा। बीच में जंगल के पार जाने के लिए एक ऊबड़खाबड़ रास्ता है। सड़क तो क्या कहेंगे, हां—पतली-सी पगडंडीनुमा एक डगर है। खैर, कुछ भी हो, है तो रास्ता ही—जंगल के पार जाने का !.........

हमारे देश—यानी दुनिया के सबसे बड़े आजाद जनतन्त्र देश—में 'अनपढ़ता' या शालीन भाषा में कह सकते हैं : 'निरक्षरता' एक घना भयावह जंगल ही तो है, जिसे पार करने के लिए आजादी के बाद हम बीहड़ डगर पर लगातार चलते रहे हैं और आगे भी तमाम उलझनों और आपाधापी के बावजूद चलते रहने की हमारी यह इच्छा और कोशिश लगातार जारी है। रही बात इस लंबे सफर में चलते रहने के दौरान सफलता की—तो आंकड़े बोलते हैं कि इस समय हम कहां और किस पड़ाव पर हैं। मानना होगा, और मान लेना भी चाहिए, कि हमारे इस लम्बे सफर की, कुछ अड़चनों और भटकावों के बावजूद एक सही दिशा बराबर बरकरार है। उदाहरण जरूरी ही हो तो, फिलहाल बेझिझक अपने इसी पड़ाव का हवाला देना ही काफी होगा कि आपके हाथों में आयी यह पुस्तक नवसाक्षरों के लिए प्रकाशित है।

जी हां, इस श्रृंखला में प्रकाशित आठ नयी पुस्तकें पिछले दिनों भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा 'ऐस्पेबे' के सहयोग से सूरजकुंड में आयोजित लेखक-कार्यशाला में लिखी गई थीं। इस तरह की कार्य-शालाएं भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा पहले भी कारगर रूप से

सम्पन्न हुई हैं, लेकिन विषय की विविधता और सर्जनात्मक लेखन की सबरसता के कारण यह सूरजकुंड कार्यशाला सहज ही अनूठी हो गयी। इस कार्यशाला में राजधानी दिल्ली तथा दूसरे शहरों से आए सजग लेखकों ने पूरी हार्दिकता से हिस्सा लिया और राष्ट्रीय एकता, परिवार कल्याण, जनसंख्या शिक्षा, सामाजिक कुरीतियों, महिला शिक्षा, पर्यावरण, ग्रामीण विकास—जैसे विषयों पर खुले मन से लिखा। हमें विश्वास है, उनकी लिखी पुस्तकें नव-साक्षर साहित्य के पाठकों, और प्रशिक्षकों को भी, पूरा सन्तोष अवश्य देंगी।

अंत में, 'ऐस्पेबे' और कार्यशाला में सक्रिय रूप से भागीदार लेखकों के प्रति मैं आभारी हूं।···साथ ही, इस कार्यशाला को सफल बनाने के लिए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा के सहयोगियों—डॉ० एस०सी०दत्ता, श्री जे० एल० सचदेव और श्री पद्मधर त्रिपाठी को अपना धन्यवाद देता हूं। आमीन !·········

विनम्र

—जे० सी० सक्सेना
महासचिव (अवैतनिक)

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110002

25 दिसम्बर, 1985

नया सवेरा

लोक-नाटिका

तेरह पात्र

नट
नटी
जोकर
अलगू
गुपाल
मंगू
गंगू
दरोगा
सेठ
जमना
कमल
कुंदन
बैजनाथ

नगाड़ा बजता है। एक ओर से नट और दूसरी ओर से नटी का ताल पर नाचते हुए प्रवेश।

नट :

दोहा

सदा तस्करी दाहिने, सम्मुख भ्रष्टाचार।
आगे पीछे घूमता है काला बाजार।

चौबोला

है काला बाजार, करें हम आज उन्हीं की पूजा
तीन देवता कलियुग के अब और सहाय न दूजा
यही अब देव हमारे जी
इन्हीं के संग सहारे जी
चलो हम जनम सुधारें जी
मिल-जुलकर तीनों देवों की हम आरती
उतारें जी।

नटी : प्यारे नटराज !

नट : क्या है मेरी उड़न तश्तरी !

नटी : यह कैसी वन्दना है—इसमें ब्रह्मा, विष्णु,

महेश का कहीं नाम नहीं है ।

नट : आजकल उनका कोई काम नहीं है ।

दोहा

ब्रह्मा, विष्णु, महेश का शेष हुआ अधिकारी ।
अब कलियुग के देवता करते बेड़ा पार ।

नटी : लेकिन नटराज, ब्रह्मा के तीन मुख हैं ।

नट : तस्करी के हजार मुख हैं ।

नटी : विष्णु के चार हाथ हैं ।

नट : भ्रष्टाचार के बेशुमार हाथ हैं ।

नटी : महेश की जटाओं से गंगा की धार बहती है ।

नट : काले बाजार से धन की जमुना आर-पार बहती है ।

नटी : नटराज ! यह बेवक्त की शहनाई है ।

नट : मैंने जानबूझ कर बजाई है ।

नटी : हम लीक से हट गये ।

नट : इसलिए कि हम पतंग की तरह कट गये ।

नटी : मैं कुछ समझ नहीं पाई ।

नट : समझ लो, तस्करी, भ्रष्टाचार और काली कमाई—
इन्होंने गरीब जनता की यह हालत बनाई ।

नटी : समझ गई—अब अनपढ़ों को पढ़ना है ।

नट : हां, जनता को भूख और गरीबी से लड़ना है ।

नटी : हमें सोये इन्सान को जगाना है ।

नट : इक्कीसवीं सदी में तुम कहां हो; यह बताना है।

नगाड़ा

नटी : नटराज ! प्यारे नटराज !!

नट : बोल मेरी रानी बोल—अपनी नन्हीं-सी चोंच खोल !

नटी : जा, मैं तुझसे नहीं बोलती—

नट : अरे रे, तू तो रूठ गयी रानी, बोलने लगी अटपटी बानी !

नटी : तू मुझे पंछी समझता है ना ?

नट : हां, मेरी भोली मैना !

नटी : तब हट—यहां से पलट।

नट : हो गया खेल चौपट।

गाकर

न रूठो मुझसे रानी जी !
शाम यह बड़ी सुहानी जी !

नटी : क्या मैं तुझसे प्यार नहीं करती ?

नट : करती है।

नटी : तेरे गुस्से से नहीं डरती ?

नट : डरती है।

नटी : तेरे लिए दिन-रात नहीं मरती ?

नट : मरती है—भागवान मरती है !

नटी : तो फिर बता, तू कितना प्यार करता है मुझे ?

नट : मन भर !

नटी : अरे—नये पैमाने में बोल !

नट : हो गया डिब्बा गोल—अरे बाबा क्विंटल भर !

नटी : तो क्या मेरा प्यार सस्ता है ?

नट : नहीं मेरी जान, तेरा प्यार तो कचौड़ी की तरह खस्ता है !

नटी : तू मुझे पांव की जूती समझता है ?

नट : नहीं-नहीं, पांव की जूती बीवी से महंगी है !

नटी : तब तू मुझे क्या समझता है ?

नट : तू मेरी जान है—प्यार का मुरादाबादी पान-दान है !

नटी :

दोहा

सोच-समझकर दीजिए उत्तर मेरे प्रान !
क्यों महंगी हर चीज है क्यों सस्ता इंसान ?

नट :

बहरे तबील

तंगी जिस चीज की होगी महंगी वही,
जानती तू नहीं कितनी नादान है !
आदमी बढ़ रहे मच्छरों की तरह,
इसलिए सस्ता दुनिया में इन्सान है !

नटी : समझ गयी, जो चीज ज्यादा होती है वही होती है सस्ती ।

नट : वाह गुलबदन ! मान गया तेरी हस्ती । नटी सुन—मेरे पास आ ।

नटी : अरे जा—हवा खा । यह सब है तेरी मतलब-परस्ती ।

नट : तूने अब तक गुस्सा नहीं थूका ।

नटी : तू भी तो कहने में नहीं चूका ।

दोहा

कान खोल करके सुना, अब न गलेगी दाल ।
दिखा रहे क्यों प्यार तुम समझ गयी मैं चाल ।

दोनों ओर से पुरुष और स्त्रियों का प्रवेश ।

समूह गान

नटी : जा जा रे बड़ा आया प्यार करइया !

स्त्रियां : जा जा रे बड़ा आया प्यार करइया !

नट एवं अन्य : हैया रे हैया मारे डंक ततइया ।

स्त्रियां : जा जा रे बड़ा आया प्यार करइया !

नट :

दोहा

पत्नी है दासी नटी, पति होता भगवान।
पति चरनों में बैठ कर उसका है कल्यान।
तू रानी मेरी चुनन मुनन की मइया-जान !

नटी :

दोहा

इन बातों में अब नहीं रहा तनिक भी सार।
पत्नी को भी मिल गये अब समान अधिकार।
नैया के अपनी हम हैं आज खिवैया—
हैया रे हैया।

नट :

दोहा

क्यों मनमानी कर रही, बढ़ा रही है बात।
डाली से होकर विलग हरा न रहता पात।
बता दे तुझे देगा कौन रुपइया—जा जा रे।

नटी :

दोहा

गलती मुझसे हो गयी क्षमा करो हे नाथ।
नर-नारी का है सदा जनम-जनम का साथ।
मैं तेरी राधा तू मेरा किसन कन्हैया—

नट : ओ रानी मेरी चुनन मुनन की मइया !

गाते गाते सब नगाड़े की ताल पर नाचने लगते हैं।

आकर

जोकर : बंटाधार ! यहां चल रहा है प्यार—अरे नटराज, लोग आ गये ?

नट : आ गये ।
जोकर : मेहरबान आ गये ?
नटी : आ गये ।
जोकर : लेखपाल प्रधान आ गये ?
नट : आ गये ।
जोकर : क्यों किसलिए—क्या होगा यहां ?
नटी : तमाशा ! तमाशा !! तमाशा !!!
जोकर : बोलती है या मारती है तमाचा ।

गाकर

नट : खेल दिखाने आये हैं ।

गाकर

नटी : नाचने गाने आये हैं ।

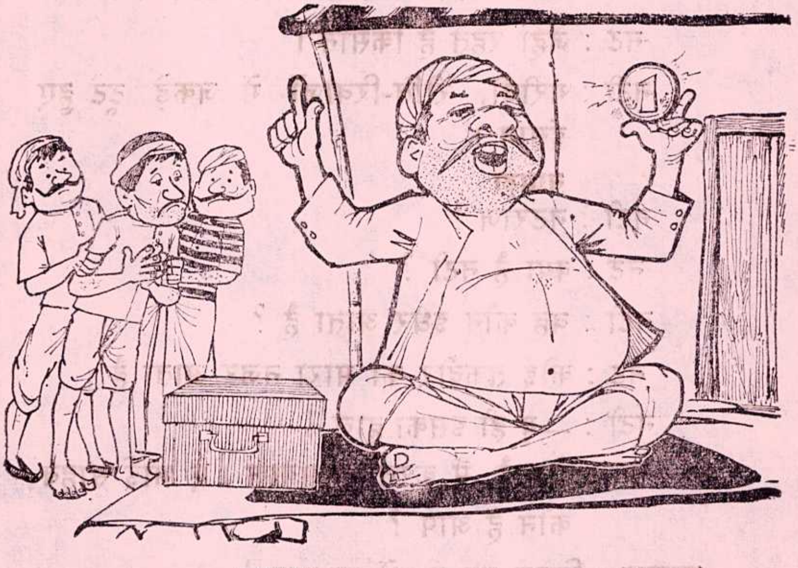

नगाड़ा

नट : नटो !

नटी : क्या है मेरे सिरताज !

नट : तमाशा देखने आया है गांव का समाज—
बोलो कौन-सा तमाशा हो आज !

नटी : जो अच्छा हो—रबड़ी का लच्छा हो !

नट : समझ गया नटी—मेरी संजीवनी वटी ।

नटी : कौन-सा तमाशा दिखाना है ?

नट : हमें तस्करी, भ्रष्टाचार, काली कमाई को मिटाना है ।

नटी : देश को जगाकर बढ़ाना है ।

नट : पढ़ना है और पढ़ाना है ।

नटी : गरीब को ऊपर उठाना है ।

नट : तो फिर हम चलते हैं गांव में ।

नटी : ताल तलैयों और आमों की छांव में ।

नट : जहां रहते हैं किसान ।

नटी : गरीबी, रीति-रिवाजों में जकड़े टूटे हुए इंसान ।

नगाड़ा

नटी : नटराज !

नट : क्या है नटी ?

नटी : वह कौन इधर आता है ?

नट : कोई तकदीर का मारा नजर आता है ।

नटी : —यूं ही इसका हाल !

नट : ठीक है, मैं करता हूं सवाल । ऐ भाई साहब कौन हैं आप ?

मास्टर : बिगड़े हुए बच्चों का बाप !

नटी : क्या मतलब ?

मास्टर : भोग रहा हूं अपने किये हुए पाप !

नट : क्या करते हैं आप ?

मास्टर : पछताता हूं। वैसे मैं हूं गांव का मास्टर।

दर्शकों से

जोकर : या टूटे और पिचके हुए कनस्तर !

मास्टर : मेरा घर टूट गया। कुछ नहीं रहा।

नट : क्या हुआ ? घर में कौन-कौन है ?

मास्टर : सब हैं, लेकिन कोई घर में नहीं है।

नटी : पत्नी कहां है ?

मास्टर : अस्पताल के जच्चाखाने में।

नट : और बच्चे ?

मास्टर : एक है पागलखाने में।

नटी : दूसरा ?

मास्टर : जेलखाने में।

नट : तीसरा ?

मास्टर : शफाखाने में।

नटी : चौथा ?

मास्टर : मुसाफिरखाने में।

नट : पांचवां ?

मास्टर : उसे पुलिस ले गयी है थाने में।

नटी : छठवां ?

मास्टर : मां के साथ जच्चाखाने में।

जोकर : वह बड़ा होकर रहेगा यतीमखाने में।

नट : सातवां ?

मास्टर : और तीन लड़कियां हैं।

जोकर : नहीं यह सब आपकी गलतियां हैं ।

मास्टर : मानता हूं ।

बहरे तवील

जनमा पाला पोसा बड़े प्यार से,
आज लेकिन किसी का सहारा नहीं ।
बीच मंझधार में आ के नैया फंसी,
दूर तक दीखता अब किनारा नहीं ।
अपने घर में बना एक मेहमान हूं,

नट : आपका बुरा हाल है ।

मास्टर : क्या करूं खोटा अपना ही माल है ।
अपने बेटों से यारो परेशान हूं,
अपनी करनी पर खुद ही परेशान हूं ।
खुद ही फंसा हूं आकर अपने ही जाल में,
कब तक चलेगी गाड़ी इस खस्ता हाल में ।

नट : अरे-अरे किधर जाते हो ?

मास्टर : स्कूल में पढ़ाना है ।

जाना

नटी : वाह कैसा जमाना है !

जोकर : यह गांव के मास्टर हैं—इनकी भी अक्ल मोटी है, पांव बढ़ाते गये—नहीं देखा कि चादर छोटी है ।

नट : इन्हें अपने बच्चों का गम है ।

नटी : बच्चों की ममता जो न कराये सो कम है !

जोकर : चारों बच्चों को न इस तरह बदनाम करो ।
दोष औरों के सिर खुद आप गलत काम करो ।
बच्चों ने कहा था चोरी करो, घूस लो, बैंक

का उधार मत चुकाओ ? शराब पीकर आदमी से जानवर बन जाओ ?

नट : पूरे घर एक कोठरी में सिमट गये ।

नटी : बड़े-बड़े खेत क्यारियों में बंट गये ।

नट : घर-घर में बच्चों की कतार है ।

नटी : आमदनी कम—बड़ा परिवार है ।

नटी : पैदावार बढ़ो मगर कम है ।

जोकर : तुम्हारी बात में दम है । पैदावार बढ़ी मगर खेतों में नहीं घरों में—गल्ले की नहीं—लल्ली और लल्ले का ।

नट : गांव के लड़के हल की मूंठ छोड़कर शहर जाते हैं ।

नटी : नौकरी नहीं पाते तो नारे लगाते हैं ।

नट : चोरी करते हैं, डाके डालते हैं ।

नटी : तरह-तरह के नशे पालते हैं ।

जोकर : बोलो नटराज सबको कैसे मिले काम—जबकि

काम है कम ज्यादा हैं हाथ !

नट : हाथों के साथ काम क्यों बढ़ा नहीं ।

जोकर : सीधा था अक्षर किसी ने पढ़ा नहीं ।

नटी : दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती गयी आबादी ।

नट : इसीलिए हो गयी बरबादी !

नटी : रोक दो यह आबादी की बाढ़ ।

जोकर : मत करो जिन्दगी से खिलवाड़ ।

नटी : आप हैं मां—आप हैं बाप !

नट : बच्चों के लिए क्या कर रहे हैं आप ?

नटी : बच्चों, जवानों और बूढ़ों को पढ़ाइए ।

जोकर : गांवों के विकास में हाथ बंटाइये ।

नट : दूर कर दो अज्ञान का अंधेरा ।

नटी : तुम्हारी मुंडेर पर है नया सवेरा ।

जोकर : आइए, हम एक और नजारा दिखाते हैं । पढ़ने का फायदा बताते हैं । वह देखिए आ

रहा है गांव का साहूकार—अंगूठा लगवाकर देता है उधार ! नहीं रत्तीभर भूल करता है। एक के दस वसूल करता है।

नट : गांव के गुंडे हैं उसके दलाल।

नटी : तभी हड़प लेता है भोले किसानों का माल।

नट : आओ छिपकर देखते हैं इसकी माया।

सब का जाना।

सेठ का गंगू मंगू के साथ प्रवेश।

नगाड़ा।

पेट पर हाथ फेरकर।

सेठ : गंगू-मंगू !

दोनों : हां सरकार !

सेठ : आ जाओ मेरे कने—अरे एक नहीं दोनों जने।

दोनों : हुकुम सरकार ?

सेठ : अलगू को पकड़ के ले आ—अभी इसी टेम—तब करूंगा पूजा नेम—करज तो ले लेवे आंखें मूंद, पर असल तो असल, नहीं देवे हैं पूरा सूद—अरे रावन-कुम्भकरन—की तरियां क्यों खड़े हो जाओ ? कुत्ते की चाल—बिल्ली की चाल आओ।

गंगू : सूद में उसकी पूरी फसल उठा लाए ?

सेठ : फेर क्या हुआ, तुम्हें कौन समझाए ? अरे अभी तक सूद बकाया है।

दोनों : समझ गये—बही खाते की माया है।

सेठ : उल्लू के पट्ठो ! सावधान। दीवार के भी होते हैं कान।

गंगू : हम अभी आते हैं।

मंगू : अलगू को पकड़ कर लाते हैं।

जाना

गाना

सेठ : बाप बड़ा ना भइया
भइया सबसे बड़ा रुपइया।
सबसे बड़ा रुपइया,
भइया सबसे बड़ा रुपइया।
इसी रुपइया की खातिर
हम करते गोरखधन्धे।
अपने तो जिजमान, गांठ के—
पूरे आंख के अंधे।
बिना रुपइये के झूठे हैं
जग के नाते भइया—बाप बड़ा न···

नगाड़ा

गंगू मंगू अलगू को सेठ जी के पांवों में डाल देते हैं।

सेठ : अरे-अरे, धक्का मत मारो—अपना आसामी है।

दोनों : साला बड़ा हरामी है। करता था आना-कानी।

सेठ : क्यों भाई ! मेरे पास आने में मरती है नानी। मैं क्या चाहूं तू आ—मेरा तो सूद चुका !

अलगू : सूद में मेरी पूरी फसल उठा लाये ये गुंडे।
सेठ : हूंऽहूंऽहूंऽ गुंडे नहीं—मेरे घाट के पण्डे। जब कोई इनका कहना नहीं मानता तो चला देते डण्डे।

अलगू :

बहरे तवील

धमकियां दे डराते हो मजबूर को,
आदमी तुम नहीं एक शैतान हो।
कर्ज से दस गुना सूद तुमको दिया,
फिर भी छीनी फसल कैसे इंसान हो!

सेठ : शैतान—गंगू-मंगू ! यो तो बन गया नेता। भाषन दे रिया है भाषन—खड़ा क्या है काठ के उल्लू !
इसे दे कुछ परसाद।

गंगू : ले ये भी क्या करेगा याद ?

दोनों उसे खड़ा करके मारते हैं।

आकर

गुपाल : हैं हैं ! यह क्या कर रहे हो फसाद ! मत मारो, मत मारो।

सेठ : तू इसका वकील है—मैं पूछूं तू यहां इस बखत क्यों आया ?

दोनों : तुझे किसने बुलाया ?

गुपाल : चुप रहो—मुझसे मत लड़ाना जबान…

सेठ : हां, यो तो पूरा भीमसेन है बूढ़ा पहलवान। अपना काम फटाफट बोल—फिर जल्दी से

हो जा गोल।

गुपाल : निकालो मेरा रुक्का और बही—चुकानी है रकम रही सही।

सेठ : यो तो धन्नासेठ हो गया दीखे—मंगू उठा रुक्का और बही।

गुपाल : कितनी है रकम ?

मूंग लाकर देता है।

सेठ : दो हजार। न एक पैसा ज्यादा न एक पैसा कम—

गुपाल : लेकिन मैंने तो दो सौ लिए थे—सूद भी भरा था।

सेठ : हिसाब एकदम सही है। नहीं है कोई फेर।

गुपाल : अंधेर है अंधेर—सेठजी रुक्का दिखाना।

सेठ : ले देख ले—अनपढ़ गंवार ! ये देख—ये रहा तेरा अंगूठा।

गुपाल : हूंऽ तो यह बात है ! सेठ इसमें बेईमानी है, फिर भी रकम चुकाता हूं। अभी घर से रकम लेकर आता हूं।

जाना

सेठ : साला—इस तरियां देख रिया था जैसे पढ़ना जाने है।

अलगू : मुझे छोड़ दो, मेरे बच्चे भूख से बिलबिला रहे हैं।

सेठ : बच्चे न हुए, कीड़े-मकोड़े हो गये !

अलगू : सब तुम्हारी करनी है सेठ ! तुमने—हां तुमने

मारा है मुझ गरीब का पेट।

सेठ : अच्छा नाटक करे है—किसने सिखाया है?

मंगू : मुखिया के लड़के चन्दन की माया है।

गंगू : वही पढ़ाता है पाठ।

सेठ : तो यह है ठाठ।

मंगू : बूढ़ों को पढ़ाता है।

गंगू : पूरा निखट्टू है।

मंगू : वह इसकी लड़की पारवती पर लट्टू है!

अलगू : चुप रहो, मत करो गंदी जुबान—तुम, तुम लोग भी बाप हो—मेरी पारो पर कीचड़ मत उछालो।

सेठ : कभी मेरे को अपने घर बुला लो—सूद कर दूंगा माफ! पूरा हिसाब साफ!

चीखकर

अलगू : सेठ!

गंगू : इसकी लौंडिया चम्पा चमेली है।

मंगू : मक्खन की डेली है!

अलगू : चुप हो जाओ, कुत्तो! वरना पी जाऊंगा।

सेठ से

खून—दे दूंगा जान!

मेरे साथ तू भी मिट जाएगा।

आकर

दरोगा : लेकिन पहले यह सेठ थाने जाएगा।

सेठ : सरकार माई-बाप, खड़े क्यों हैं आप—गंगू-मंगू लाओ नाश्ता और पान—घर आये हैं

भगवान ।

दरोगा : सिपाहियो ! जब्त कर लो रुक्के और खाते—
तिजोरियों में डाल दो ताला—थाने चला
लाला ।

गिड़गिड़ाकर

सेठ : रहम, रहम, माई-बाप !—मैंने कुछ नहीं
किया !

दरोगा : तुमने गांव के लोगों को धोखा दिया। दो सौ
उधार देकर दो हजार का रुक्का किया ।

सेठ : यह झूठ है ।…

गुपाल : यह सच है ! मैंने अभी अपना रुक्का देखा है।

सेठ : सरकार ! यह गैर पढ़ा-लिखा आदमी रुक्का
नहीं पढ़ सकता। निरक्षर ! तूने सरकार को
तकलीफ दी—मैं तुझे बता दूंगा ।

गुपाल : मैं चन्दन भइया के स्कूल में पढ़ चुका हूं—
मैं अब तुम्हें पढ़ा दूंगा सेठ । अब तो बैंक से
करजा उठाऊंगा। खेतों को खुशहाल बना-
ऊंगा। ले जाइए इसे—यह बड़ा है मक्कार !

सेठ : सरकार !

दरोगा : सेठ ! मैं तुम्हें गुपाल चौधरी की रिपोर्ट पर
करता हूं गिरफ्तार ।

सेठ : नहीं-नहीं, मैं मर जाऊंगा सरकार !

अलगू : मेरा भी करो उद्धार—इसने मुझे कर दिया
बरबाद ।

दरोगा : घबराओ मत—मैं वह सजा दिलवाऊंगा जो

यह भी करेगा याद । ले चलो इसे !

सेठ : सरकार ! सरकार !! सुन लो मेरी बात !

दरोगा : अब तो पूरे गांव में निकलेगी तुम्हारी बारात !

ले चलो, देर मत लगाओ ।

सिपाहियों द्वारा सेठ को घसीटकर ले जाना। सब जाते हैं।

नगाड़ा

नट-नटी का नाचते हुए आना।

नटी : देखा नटराज—प्रौढ़ शिक्षा का कमाल ।

नट : सेठ को जनता ने कर दिया हलाल ।

नटी : जब पढ़ जाएगी गांव की हर पीढ़ी।

नट : यही है हमारे विकास की सीढ़ी ।

आकर

जोकर : नटराज ! जम रहा है खेल ।

नट : हमारा करतब कभी हुआ है फेल ?

नटी : लोगों को हमारे तमाशे दिखाई पड़ रहे हैं
जैसे अपना तमाशा !

नट : यानी कि चीनी हमारी उनका बताशा ।

जोकर : अब बातों की चटनी करो बंद । खेल चालू
रखो, जिससे दर्शकों को आये आनन्द ।

नटी : ठीक है जोकर !

नट : हमें मिलता कुछ खोकर ।

नटी : हमें बनाना है एक नया समाज ।

नट : जिसमें हो हर किसी की आवाज ।

नटी : मुसकराहटों के फूल खिलाने हैं ।

नट : आंगनों में बूटे सजाने हैं ।

नटी : आपस में मिलजुल कर, थामकर हाथ ।

नट : चलना है दूर एक साथ ।

नटी : यही हमारा कल का सपना है ।

जोकर : लेकिन कैसे हो पूरा, दोष तो अपना है ।

दोहा

घर घर में घर किये हैं आज अंध-विश्वास !
रीति-रिवाजों में बंधी अकल खा रही घास !

चौबोला

नटी : तो तुम खेल जमने का कारण अपनी कला
को मानते हो ।

नट : हां मेरी प्यारी नटी !

नटी : तब तुम कुछ नहीं जानते ।

नट : क्या मतलब ?

अक्ल खा रही घास नहीं देता कुछ भी

दिखलाई !

शादी ब्याह बने हैं धंधे, करते खूब कमाई !

नट : हम रीति-रिवाजों की लाश ढोते हैं ।

नटी : मन में बड़े खुश होते हैं ।

नट : अपने को समझते हैं मीर ।

जोकर : लेकिन सब हैं लकीर के फकीर ।

नट : कितनी पागल है यह सदी ।

नटी : पंडों ने बेच दी नदी !

जोकर : बस धन पर है सबकी निगाह ।

नट : हर लड़के के बाप को है दहेज की चाह ।

नटी : वह देखो कोई दुखियारी आ रही है ।

नट : कोई दुख भरा गीत गा रही है । नदी की ओर आ रही है ।

गीत

जमना : नदिया री नदिया—
मैं हूं दुखिया—
लै चल मोहि बहाय—
कि अब तो मोसे जिया नहिं जाय ।
माता-पिता की बहुत दुलारी,
बोझ बनी हूं भारी ।
नाहिं सिंदूर लिखा मोरे माथे,
ना चूनर ना सारी,
डोली दुआरे उठ न सकी अब
अरथी ही उठि जाय ! नदिया री नदिया···

नटी : नटराज !

उदास-सा

नट : क्या है नटी ?

नटी : शादी एक पवित्र संस्कार है ।

आकर

जमना : नहीं, नहीं, शादी एक व्यापार है ।

नट : वह जिन्दगी का मसौदा है ।

जमना : नहीं, वह ऊंची बोली का सौदा है ।

नटी : यह लड़की दहेज की शिकार है ।

नट : तभी मरने को तैयार है ।

नटी : सुनो बहन !

जमना : मुझे जाने दो । मुझे मत टोको । मेरी राह मत रोको ।

नट : खुद को मौत की खाई में मत झोंको ।

जमना : मौत ही अब हमारा इलाज है ।

नटी : तुम नहीं दोषी
तो यह समाज है ।

नट : तुम कौन हो ? कुछ तो बताओ ।

जमना :

बहरे तवील

मैं हूं लड़की दुखी एक मां-बाप की,
अपने भइया की प्यारी दुलारी बहन ।
जिसकी बारात लौटी सजे द्वार से
ऐसी किस्मत की मारी कुंआरी दुल्हन ।

नटी : क्या ? द्वार से लौट गयी बारात ?

नट : क्या हुआ ? क्यों नहीं बनी बात ?

जमना : वे द्वार पर मांगते थे दो हजार—बापू ने हाथ जोड़े बार-बार। पांव पर पगड़ी रख दी उतार। मेरे बापू की नहीं थी औकात। वे नहीं माने। लौटा ले गये बारात।

नटी : धिक्कार ! सौ बार धिक्कार !

जमना : शादी के लिए बापू ने बेच दिये बैल, गिरवी रख दी बाप-दादों की जमीन।

नट : फिर भी नहीं भरा पेट। भाई कितने हैं ?

जमना : तीन।

नटी : बहनें ?

जमना : चार। बापू इसीलिए थे लाचार—कम जमीन बड़ा परिवार···

जोकर : ऊपर से मंहगाई की मार।

जमना : बापू कुछ कह न सके—बेइज्जती सह न सके। बापू हो गये बेहोश।

नटी : इसमें तो है उस लड़के का दोष।

नट : उसे टकराना चाहिए था।

नटी : बाप को राह पर लाना चाहिए था।

जमना : अब खत्म हो गयी कहानी—मुझे बुला रहा है नदी का बहता हुआ पानी। अब मुझे मरना है।

नटी : नहीं तुम्हें कुछ करना है।

जमना : नहीं, अब बिलकुल नहीं सहा जाता—माता-पिता भाई-बहन का दुख नहीं देखा जाता ! सब मुझे बिसूरते हैं, मेरे अपने मां-बाप फटी-

फटी आंखों मुझे घूरते हैं ।

बहरे तबील

बोझ बनकर रहूं अपने मां बाप का,
एक पल अब तो मुझको गंवारा नहीं ।
भाग फूटा है रूठी है तकदीर तो,
किस तरह से जिऊं कुछ सहारा नहीं ।

नटी : घबराओ मत बहन, यह लोगों की भूल है ।

नट : हर लड़की आंगन का फूल है ।

नटी : हर लड़की शक्ति है—मां है ।

नट : वह देश और समाज की गरिमा है ।

जमना : तो फिर लोगों को क्यों है दहेज का जुनून—
क्यों चूसते हम लड़कियों का खून ! हम जानवरों की तरह खूंटे बदलते हैं । हमारे बाप के दिवाले निकलते हैं । इस जमाने में लगा दो आग, जहां रुपयों से भरी जाती है हम लड़कियों की मांग !

नटी : धीरज रखो बहन !

जमना : अब नहीं होता सहन । अब मुझे कुछ नहीं सुहाता ।

आकर

कमल : सुबह का भूला शाम को घर आये तो भूला नहीं कहाता ।

नट : तुम कौन हो भइया ?

कमल : मैं बेटा हूं उस जिद्दी बाप का जो लौटा ले गया द्वार से बारात । लेकिन अब मैं छोड़

आया घर—उन सब लोगों का साथ ।

नटी : किसलिए ?

कमल : क्योंकि मुझे थामना है अपनी पत्नी का हाथ ।

हाथ पकड़ता है

जमना : नहीं ! नहीं !! नहीं !!! मैं तुम्हारे पांव पड़ती हूं, मेरा हाथ छोड़ दो। अगर इस बीच हमारा कोई नाता बन गया है तो उसे तोड़ दो ।

कमल : जमना, मैं तुमसे मांगता हूं माफी ।

जमना : सिर्फ इतना ही नहीं है काफी ।

कमल : जमना !

जमना : मैं नहीं चाहती, मेरे लिए त्याग हो घर-बार, माता-पिता का प्यार ।

कमल : मैं तुम्हें देता हूं पत्नी का अधिकार—हम किसी मंदिर में रचायेंगे ब्याह—तलाश करेंगे जिंदगी की नई राह ।

नटी : भई वाह !

जमना : ब्याह का फैसला मां-बाप का काम है । बिना तुम्हारे पिता के आशीष के यह ब्याह नहीं होगा । बिना मेरे पिता के नहीं होगी विदाई ।

नट : बोलो ! बात समझ में आई ?

आकर

कुन्दन : मैं दूंगा आशीष—अपनी बहू की डोली खुद उठाकर ले जाऊंगा अपने घर ।

कमल : बापू ! आप इधर !!

जमना घूंघट निकालती है

कुन्दन : बेटा ! मेरी आंखों पर था लोभ और लालच का पर्दा । मैं भूल गया कि जो बाप बेटी देता है, वह क्या नहीं देता, लेकिन अब वह पर्दा हट गया—अंधेरे का बादल छंट गया—सुबह के भूले घर आ गये—इन्हें माफ कर दो बेटी !

जोकर :

शेर

समझे तो आप किंतु बड़ी देर से समझे !
तीतर से मुर्ग से नहीं, बटेर से समझे !

नट : बकरी से मेमने से नहीं शेर से समझे !

नटी : समझे तो लेकिन बड़ी देर से समझे !

कुन्दन : चलो कमल ! हमें समधी जी के पास चलना है । गले लग कर मिलना है ।

आकर

बैजू : मैं गैल में अपनी आंखें बिछा दूंगा समधी जी ।

गले मिलकर

कुन्दन : मुझे माफ कर दो बैजनाथ ! मैंने बहुत बुरा सलूक किया है तुम्हारे साथ ।

जमना : बापू !

पिता के पास खड़ी हो जाती है ।

बैजू : समधी जी ! आपने उबार लिया—मन सागर

भरे गले से

के पार उतार दिया !

कुन्दन : नहीं बैजनाथ, हमारी ही गलती थी—मैं हूं तुम सब का गुनहगार ।

बैजू : चलो, घर चलकर हमारा भी बेड़ा लगा दो पार !

कुन्दन : चलो कमल !

बैजू : आना जमना ।

नगाड़ा

सबका प्रस्थान ।

नटी : नटराज !

नट : क्या है मेरी छुईमुई !

नटी : यह क्या बात हुई ?

नट : तलवारों की भीड़ में खो गयी सुई ।

जोकर : मतलब ?

नट : तमाशा दिखाते-दिखाते हम खुद बन गये तमाशा ।

नटी : पर बंध गयी है एक आशा ।

नट : सुबह के भूले शाम को घर आ गये ।

नटी : पांव पर उमड़ते विपदा के बादल छितरा गये ।

नट : लोग अब जागने लगे हैं ।

जोकर : अपना अधिकार मांगने लगे हैं ।

नट : अब फलने-फूलने लगे हैं गांव ।

नटी : गांव की नंगी धरती पर फिर लहराने लगी

है नये पेड़ों की छांव ।

नट : आओ भाइयो—हम खुशियां मनाएं ।

नटी : झूम-झूमकर नाचे गाएं ।

समूह गान

करो करो रे जतन !
लागे ऐसी रे लगन
फिर नया जमाना आए
घर-घर में खुशी छा जाए
करो करो……!
विपदा का मिटे अंधेरा
फिर आये नया सवेरा
इस नील गगन के नीचे
खुशहाली करे बसेरा
तस्करी मुनाफाखोरी
इस धरती से उठ जाए
करो करो रे जतन……!
हम सुख के साज सजाएं
इक नया समाज बनाएं
मिल-जुलकर भाई-भाई
ऐसी आवाज उठाएं
करो ऐसा रे जतन
घर घर बचपन
डाली पर ना मुरझाए…।
करो करो रे जतन…!

□□□

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
'शफीक मेमोरियल'
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002